अक्षत

वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

अंक सं. 13, अक्तूबर, 2022 - मार्च, 2023

पुरस्कार वितरण समारोह - 2023 की झलकियां

संपादकीय

संरक्षक

डॉ. डी साम दयाल देव
निदेशक, आईआईएसयू

मुख्य संपादक

राजीव सिन्हा

संपादक मंडल

शशिभूषण तिवारी
संजय कुमार सिंह
लालमणि
प्रियदर्शन
उल्लास जोस
लक्ष्मी जी
कस्तूरी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

वी के सी (आईआईएसयू/सीएमएसई)
वट्टियूरकाव,
तिरुवनंतपुरम - 695 013
दूरभाष - 0471 2569129

प्रिय मित्रों,

एक बार फिर से हमारी प्यारी गृह पत्रिका **'अक्ष'** के नये नवेले अंक के साथ आपके सम्मुख हूँ! हर बार की तरह इस बार भी साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिपूर्ण यह अंक आपको, अपनी मधुर, दिल को झंझोड़ देने वाली कहानी 'मानसी' के माध्यम से यह सोचने पर मज़बूर कर देगा कि विवशताओं को भी अपनी लगन और मेहनत से जीता जा सकता है। इस अंक में तकनीकी लेखन के माध्यम से पैरीलीन-सी एवं एसएसएलवी के उपयोग और विनिर्माण की जटिल प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी दी गई है। यात्रा - भ्रमण हमारे मस्तिष्क को तरो-ताज़ा कर देता है। दक्षिण भारत से लेकर प्यारे कश्मीर का यात्रा- वृत्तांत हमें समुद्र किनारे की सुंदरता व वादियों की सुरम्यता के घर बैठे ही दर्शन करा देता है। गरीबी उन्मूलन व कोविड महामारी से हमारे देश के युद्ध का वर्णन हमें नए-नए आयाम छूने की प्रेरणा भी देता है।

आशा है कि हर बार की तरह इस बार भी आपका स्नेह, आपकी प्रतिक्रिया व सुझावों के रूप में मिलेगा व हमें अक्ष को और भी ज़्यादा उत्कृष्ट और पठनीय बनाने में सहायता करेगा।

जय हिंद! जय हिंदी!

राजीव सिन्हा

पन्ने पलटने पर

03 संपादकीय
05 पिछली छमाही के दौरान संपन्न इसरो की सफल उड़ानें
07 पैरीलीन-सी
09 दक्षिण भारत की प्रथम यात्रा
12 जीत का जोश: एसएसएलवी से अनुभव
14 मानसी
16 मेरा प्यारा कश्मीर
18 जीवन की सच्चाई
19 प्रशासनिक शब्दावली
20 टिप्पणियां
21 अंतरिक्ष शब्दावली
22 राजाभाषा प्रश्नोत्तरी
23 ज़िंदगी, एक सफ़र है सुहाना
24 भारत में गरीबी मिटाने के सार्थक उपाय
25 आनंद की खोज
26 काला
28 मेरा ईश्वर मेरा विश्वास
29 चुटकुले
30 वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ
32 छमाही के दौरान वीकेसी में आयोजित अन्य कार्यक्रम
35 विश्व हिंदी दिवस-2023 के विजेताओं की सूची
36 उपलब्धियाँ
37 पाठकों की ओर से

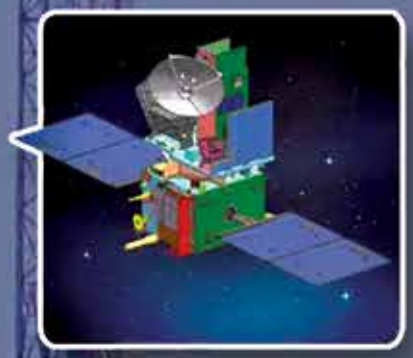

पीएसएलवी सी54

पीएसएलवी-सी 54 ने 26 नवंबर, 2022 को पूर्वाह्न 11 बजकर 56 मिनट पर अपने पूर्व निर्धारित समय पर उड़ान भरी तथा प्रमोचन के 17 मिनट बाद ओशियनसैट श्रृंखला के अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट-06 को पृथ्वी से 742 कि.मी ऊंचाई पर अपनी निर्दिष्ट कक्षा में सफलतापूर्वक अंत:क्षेपित किया। इसके बाद अन्य 8 उपग्रह भी करीब 528 कि.मी ऊंचाई पर अपनी निर्धारित कक्षाओं में स्थापित किए गए। पहली बार दो कक्षाओं में उपग्रह अंत:क्षेपित किए गए। इस प्रयोजन के लिए 'ऑर्बिट चेंज थ्रस्टर्स' (ओसीटी) का उपयोग किया गया। ओशनसैट-3 को 742 कि.मी ऊंचाई पर पहूँचाने के बाद इच्छित कक्षा में पहूँचने पर पृथ्वी अवलोकन उपग्रह या ओशनसैट-3 सफलतापूर्वक रॉकट से अलग हो गया और बाकी 8 उपग्रह 513 से 528 कि.मी पर स्थापित किए गए। यह पीसएलवी का 56वाँ और पीएसएलवी-एक्सएल प्रारूप का 24वाँ अभियान था।

एलवीएम3- एम3 वनवेब इंडिया-2 अभियान

26 मार्च, 2023 को एलवीएम3-एम3/वनवेब इंडिया-2 मिशन सफलतापूर्वक पूरा किया गया। अपनी लगातार छठी सफलतापूर्वक उड़ान में एलवीएम3 यान ने कुल 5,805 किलोग्राम प्रदायभार के साथ एसडीएससी शार से भारतीय मानक समयानुसार 09:00:20 बजे एसडीएससी शीर, श्रीहरिकोटा के दूसरे प्रमोचन मंच से उड़ान शुरु की एवं वनवेब ग्रुप कंपनी से संबंधित 36 उपग्रहों को वांछित 450 कि.मी. वृत्ताकार कक्षा में एक साथ 87.4डिग्री की आनति में स्थापित किया। •

एसएसएलवी-डी2 ईओएस-07 मिशन

एसएसएलवी-डी2 लघु उपग्रह प्रमोचन यान की दूसरी विकासात्मक उड़ान 10 फरवरी, 2023 को भारतीय मानक समयानुसार 09:18 बजे एसडीएससी शार श्रीहरिकोटा के पहले प्रमोचन मंच से सफलतापूर्वक भरी गई। अपनी 15 मिनट की उड़ान में एसएसएलवी-डी2 ने ईओएस-07, जैनस-1 और आज़ादीसैट-2 उपग्रहों को 450 कि.मी वृत्ताकार कक्षा में अंत:क्षेपित किया। एसएसएलवी निम्न भू-कक्षाओं में 500 किलोग्राम तक के उपग्रहों के प्रमोचन को 'लॉन्च-ऑन-डिमांड' आधार पर पूरा करता है। यह अंतरिक्ष तक कम लागत में पहुँचने में सहायक है, एवं कम टर्न-अराउंड समय प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, इसमें एक से अधिक उपग्रह समायोजित करने में नम्यता है एवं इसे प्रमोचन की न्यूनतम अवसंरचना की आवश्यकता होती है। •

पैरीलीन-सी

सर्वेश कुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, एलएमडी, एसआईएस

प्रस्तावना: हम हिंदी के प्रचार-प्रसार पर काफी ध्यान दे रहे हैं। किंतु तकनीकी क्षेत्र में देखा जाए तो बहुत ही कम साधन उपलब्ध है जो हिंदी में लिखा गया हो। हमारे देश के दूर-दराज़ गाँवों में रहने वाले छात्र अच्छे तकनीकी लेखन से वंचित हो जाते हैं। इसलिए तकनीकी पुस्तकों की उपलब्धता हिंदी में होना छात्रों के लिए वरदान साबित हो सकता है।

मैं यहाँ पर एक तकनीकी लेखन प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जिसका शीर्षक "पैरीलीन-सी" एक तनुपरत है।

इसका उपयोग विद्युत अवरोधक परत के रूप में अंतरिक्ष के क्षेत्र में बहुत तीव्र गति से इस्तेमाल किया जा रहा है।

व्याख्या: पैरीलीन-सी एक तनुपरत सतह पर इस्तेमाल किया जाता है। यह एक विद्युत अवरोधक का कार्य करता है।

पैरीलीन-सी का रासायनिक संरचना निम्न प्रकार से है-

जैसा कि ऊपर रासायनिक संरचना में देखा जा सकता है कि एक क्लोरीन का परमाणु पैराजाइलिलिन-सी से जुड़ा है।

पैरीलीन मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है।

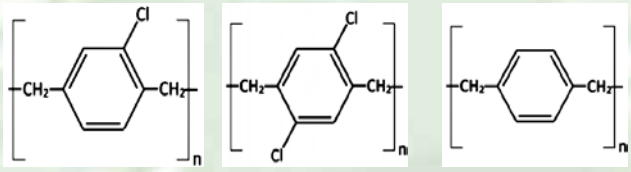

पैरीलीन-सी पैरीलीन-डी पैरीलीन-एन

पैरीलीन-सी मुख्य रूप से अंतरिक्ष के क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। इसको प्राप्त करने के लिए अलग-2 प्रयोग विधि से गुज़रना पड़ता है।

हम ऊपर चित्र में देक सकते हैं कि डाइमर जो कि प्रथम फेज़ का रासायनिक संग्रह है। इसको जब निर्वात में जिसका दबाव 38mT पर गर्म किया जाता है तो गर्म होने के कारण यह डाइमर वाष्प में बदल जाता है और इस वाष्प को मोनोमर का नाम दिया गया है।

जब मोनोमर को और अधिक तापमान लगभग 680°C पर तापीय संघटक किया जाता है तो मोनोमर टूट कर अलग घटक में बदल जाता है जो कि पैरीलीन-सी के नाम से जाना जाता है। इस पैरीलीन-सी को ठंडे चैंबर में जिसका तापमान लगभग -123°C होता है, अलग-अलग सतहों पर अनुमानित मोटाई के बराबर तनुपरत की परत चढ़ जाती है।

इसकी मोटाई 2μm से लेकर 90μm (माइक्रोमीटर) तक प्राप्त किया जा सकता है। अलग-अलग सतहीय क्षेत्रफल के अनुरूप, डाइमर का वज़न अवकलन किया जाता है। इस डाइमर के अवकलन के अनुरूप ही पैरीलीन-सी की तनुपरत की मोटाई प्राप्त की जाती है।

पैरीलीन-सी के लाभ: पैरीलीन-सी का इस्तेमाल सिर्फ अंतरिक्ष के क्षेत्र में ही नहीं अपितु और अन्य क्षेत्रों में भी किया जा रहा है, जो कि निम्न प्रकार से है-

1. पैरीलीन-सी का उपयोग तनुपरत के लिए किया जा सकता है।
2. इसका उपयोग करने से हमारे पदार्थ का वास्तविक गुण बदलता नहीं है।
3. यह एक विद्युत अवरोधक का कार्य करता है।
4. पैरीलीन-सी के द्वारा अपारगम्यता (Impermeable) को प्राप्त किया जा सकता है। इसका अर्थ है कि किसी भी तरल पदार्थ के द्वारा इसको भेदा नहीं जा सकता है।
5. यह रासायनिक क्रियाओं के द्वारा परिवर्तित नहीं होता है।
6. आज के समय में चिकित्सा के क्षेत्र में इसका बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। पैरीलीन-सी का इस्तेमाल मानव की अंग-प्रत्यारोपण (कोटिंग ऑन स्ट्रैंड्स) पर किया जाता है। इसके उपयोग से शरीर के अन्दर का जैविक तरल पदार्थ जो कि बहुत ही अम्लीय होता है, रासायनिक क्रिया नहीं कर पाता है और धातु से बना पेस मेकर, हार्ट ट्रांसप्लांट में इस्तेमाल किये गये धातु पर पैरीलीन-सी की तनुपरत चढ़ाई जा सकती है।
7. इसका इस्तेमाल सिर्फ धातु पर ही नहीं बल्कि अन्य पदार्थों पर भी जैसे कि जीएफआरपी पर भी परत चढ़ाई जा सकती है।
8. इसका उपयोग लगभग 10^{-16}mT निर्वात और लगभग 150°C वायुमंडलीय वातावरण में उपयोग किया जा सकता है। इस वातावरण में पैरीलीन-सी का गुण नहीं बदलता है।

इस प्रकार से इतनी उपलब्धियाँ या लाभ होते हैं।

उपसंहार:

अंत में इस बहुत ही महत्वपूर्ण गुण वाले पदार्थ जो कि पैरीलीन-सी होता है का उपयोग हर क्षेत्र में किया जा सकता है।

यह चिकित्सा के क्षेत्र में वरदान साबित हो सकता है। यही नहीं बल्कि तिरुवनंतपुरम स्थित श्री चित्तिरतिरुनाल मेडिकल कॉलेज में इसका उपयोग धीरे-धीरे किया जाने लगा है।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में इसका उपयोग सभी उपग्रह को घटकों जैसे पावर ब्रश ब्लॉक (साडा), आई एल जी(इसरो लेसर जाइरोस्कोप) के कार्ड, स्टेटर और रोटर (कस्प इंजन), क्रायोजनिक अपर स्टेज में भी इस्तेमाल होता है।

धीरे-धीरे यह काफी प्रचलित होता जा रहा है और दिन-प्रतिदिन इससे हमारे अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ती ही जा रही है। •

दक्षिण भारत की प्रथम यात्रा

आदित्य कुमार
तकनीकी सहायक, सीएमएडी

मुझे आज भी याद है, 22 जनवरी, 2018। जब मैं पहली बार अंतरराज्यीय यात्रा पर पटना से तिरुवनंतपुरम आ रहा था। मैं तिरुवनंतपुरम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के द्वारा निकाली गई विज्ञप्ति के अनुसार तकनीकी सहायक के पद में चयन की प्रक्रिया में सम्मिलित होने आ रहा था।

मेरा मन हर्ष से भरा हुआ था, पटना से तिरुवनंतपुरम की 3000 कि.मी. (तीन हज़ार किलोमीटर) की कुल दूरी मैं भारतीय रेल के साथ तय करने वाला था। इससे पहले मैंने कभी ट्रेन में इतना सफर नहीं किया था। बॉलीवुड सिनेमा में प्रदर्शित ट्रेन की यात्रा को याद करके मैं प्रफुल्लित हो रहा था। मेरे साथ मेरे परममित्र तथा सहपाठी विक्रांत और विकास भी उसी चयन की प्रक्रिया में सम्मिलित होने आ रहे थे। रेल की पूरी यात्रा लगभग तीन दिनों की थी, और हम तीनों ने लगभग पिछले सात दिनों से पूरे उत्साह के साथ इस यात्रा की तैयारी की थी। हमने रास्ते में खाने के लिए काफी सारे व्यंजन बनाए। पटना से यह ट्रेन दोपहर के लगभग दो बजे प्रस्थान की। हमने इस ट्रेन के शयनयान कक्ष में पहले ही बुकिंग करा ली थी।

हम तीनों की सीट ट्रेन के एक कक्ष में होने के कारण सफर का आनंद और दुगुना हो गया था। तीन दिन की इस यात्रा में उस ट्रेन को भारत के सभी पूर्वी तटीय क्षेत्रों से होकर गुज़रना था। मैं खुशी के मारे फूले नहीं समा रहा था। जैसे-जैसे ट्रेन अपने प्रस्थान से जा रही थी। मैं एक अजीब सा आनंद महसूस कर रहा था, ये मुझे आज भी रोमांचित कर देता है। चूँकि हम लोग प्रतियोगिता परीक्षा के लिए जा रहे थे, तो यात्रा के दौरान भी हम पढ़ाई कर रहे थे। उस यात्रा में हमारे कक्ष में ही दो अन्य लोग थे जो विशाखपट्टनम तक की यात्रा करने के लिए पटना में सवार हुए थे। उनकी बुकिंग कन्फर्म न होने पर हमने उन्हें सहायता भी की थी तथा अपने सीट पर उन्हें स्थान दिया था।

पहले दिन की यात्रा में मैं शाम को जल्दी सो गया था।

जैसे ही सुबह नींद खुली मैं पश्चिम बंगाल में था। वहाँ की भाषा अलग थी। लोग बांग्ला बोल रहे थे। मुझे काफी आनंद तथा आश्चर्य हो रहा था। हमने सुबह कुछ नाश्ता किया और फिर भुवनेश्वर पहुँचे पर वहाँ के स्थानीय व्यापारी से दोसा खरीदकर खाया। मैं और मेरे साथियों ने भी दोसा के बारे में काफी बार सुन रखा था। परंतु हम तीनों के लिए पहला अनुभव था। हमें यह काफी पसंद आया था।

जैसे-जैसे ट्रेन आगे बढ़ रही थी हम अपने देश की विशाल तथा समृद्ध विविधता से अवगत हो रहे थे। ट्रेन पटना से बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र-प्रदेश, तमिलनाडु के रास्ते केरल में प्रवेश करने वाली थी ओर प्रत्येक राज्य में एक नई भाषा नया पोशाक तथा नई-नई खाने की वस्तुएँ। हम लोगों को ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी और ग्रह की सैर पर निकले हों। मेरे मित्र विक्रम ने पहले दूसरे राज्यों की चर्चा कर रखी थी, तो वह हमें और भी संस्कृतियों के बारे में अवगत करा रहा था। साथ ही हम सब ट्रेन में चढ़ने वाले स्थानीय नागरिकों से भी काफी ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। ट्रेन यात्रा के दूसरे दिन की सुबह हमने विजयवाड़ा में भोजन किया। यहाँ भोजन के साथ नारियल के चिप्स दिए गए। जिसे देखकर मैं काफी दंग था। हमने कभी ऐसा नहीं देखा था। मैंने तुरंत घर पर फोन लगाया और माँ को बड़ी उत्सुकता से ये बात बताई। चूँकि उन्होंने भी दक्षिण भारत की यात्रा पहले न की थी, उन्हें भी बहुत ही आश्चर्य हुआ।

तीसरे दिन की रात्रि में मैं काफी देर तक जागकर पढ़ाई कर रहा था। मुझे आज भी याद है रात के लगभग तीन बज रहे थे, सभी लोग सो चुके थे। मैं अपनी पुस्तक लिए 80 कि.मी प्रति घंटे की गति से चलती ट्रेन में पढ़ाई कर रहा था, तभी कोयंबत्तूर स्टेशन पर एक महिला ट्रेन में चढ़ी और उसने मुझे देखा। उसकी आँखों में एक अजीब सी हैरानी थी और शायद जैसा मैं देख पाया, मेरी प्रतिबद्धता के लिए सम्मान भी। उसने मुझे बड़ी हैरानी के साथ पूछा, बेटा तुम इतनी कम रोशनी में इतनी गति से चलती ट्रेन में कैसे पढ़ पा रहे हो।" उत्तर तो शायद मेरे पास भी न था। ये पल मेरे जीवन का सबसे मार्मिक पल था, अभी तक के जीवन के अनुभव का सबसे सुखद एहसास। अगली सुबह मैं तिरुवनंतपुरम पहुँचा।

हमने रेलवे स्टेशन के सामने वाले स्नानगार में स्नान किया। तब तक मेरे पेट में चूहे कूद रहे थे। हमने फिर खाने की योजना बनाई और स्टेशन के निकट के एक रेस्टोरेंट में भोजन के लिए गए। चूँकि हममें से किसी को केरल के स्पेशल खान-पान की जानकारी नहीं थी।

हमने उन्हें केरल स्पेशल भोजन का आर्डर दिया। उसने केले के पत्ते पर हमें खाना परोस दिया। हममें से किसी को नहीं पता था कि हम क्या खा रहे थे और सच कहें तो प्रारंभ में बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था। आज चार साल तक केरल में रहने के बाद मुझे पता चला कि हमने इडियप्पम, रसम तथा अवियल का सेवन किया था।

फिर हम लोगों ने वहाँ से निकलने के बाद परीक्षा केंद्र पर जाने के लिए बस की तलाश में लग गए। केरल में काफी कम लोगों को हिन्दी आने के कारण हमें अंग्रेज़ी में ही संवाद करना पड़ा रहा था और हमें ये भी काफी रोमांचित कर रहा था। किसी तरह हमने बस के उपचालक से संबंध साधकर उन्हें अपना एडमिट कार्ड दिखाया, फिर उन्होंने हमारा काफी अच्छा मार्गदर्शन भी किया। हम लोग परीक्षा केंद्र पहुँच गये, हमारी परीक्षा की अवधि लगभग 120 मिनट की थी। मैंने परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।

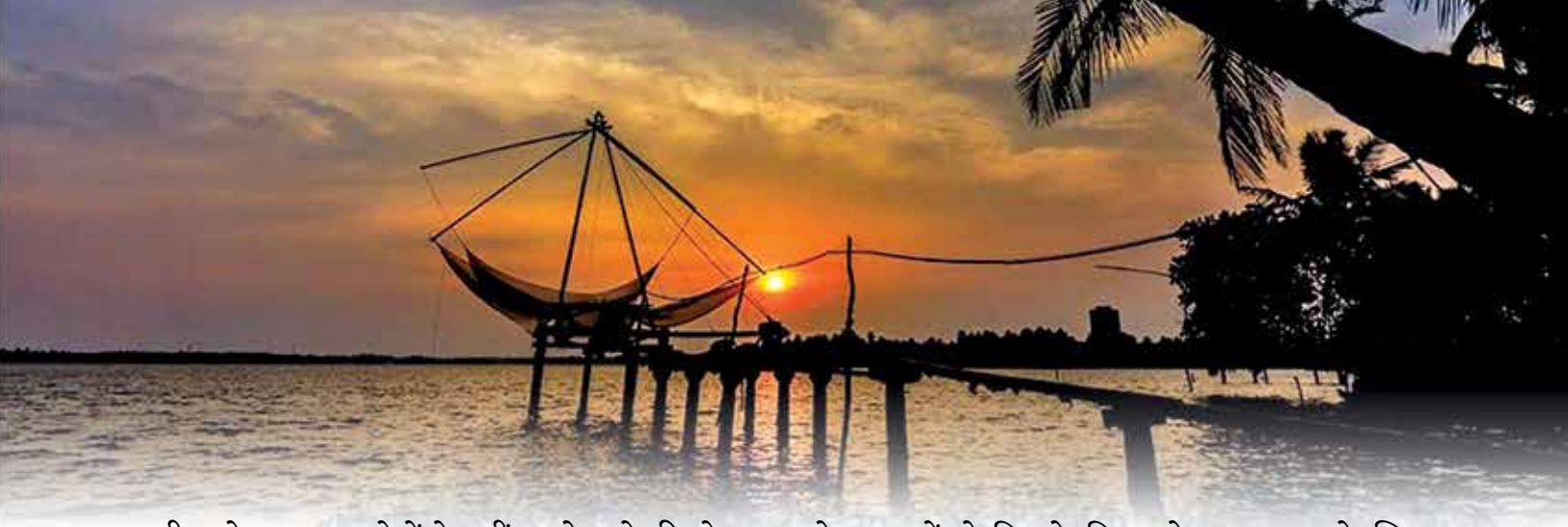

परीक्षा के बाद हम लोगों ने कहीं घूमने जाने की योजना बनाई और फिर हमने विश्व प्रसिद्ध श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर में दर्शन किया। यह मंदिर वाकई काफी अद्भुत था। इसकी कलाओं में मानो स्वयं 'विश्वकर्मा' भगवान का वास हो। इस मंदिर में प्रवेश की परंपरा भी काफी अद्भुत और अविस्मरणीय थी। हमें अपने सारे वस्त्रों को उतारकर श्वेत रंग की धोती पहननी थी। मंदिर के अंदर भगवान विष्णु की काफी खूबसूरत प्रतिमा थी। हमने पूजा-अर्चना की और उसके पश्चात् पुनः तिरुवनंतपुरम रेलवे स्टेशन लौट आए। हमारी वापसी की यात्रा दो चरणों में संपन्न हुई थी, पहले हम तिरुवनंतपुरम से कोलकत्ता गए थे, और फिर कोलकत्ता में दो दिन के विराम के बाद पटना के लिए वापसी हुई थी।

मेरी ये पूरी यात्रा लगभग 7-8 दिनों की थी जिसने मुझे असली भारत में और उसमें सिमटी असीम विविधता का दर्शन कराया। मैं पहली बार इस यात्रा के दौरान अलग-अलग संस्कृति, भाषा, रंग और अलग-अलग वेशवृत्ति वाले अपने भारतीयों से मिला। इस यात्रा ने न सिर्फ मुझे भारत की विशालता, वैभवता का दर्शन कराया, अपितु स्वयं के जीवन के लिए उपयोगी काफी सारे अनुभव भी सिखाए। इस यात्रा में संपन्न रोमांच को एक बार फिर जीने की इच्छा इस लेख के साथ प्रबल हो रही है। •

हर्षा दीपा स्याम
कक्षा 3
दीपा सारा जोण, वैज्ञा/इंजी-एसएफ,
एलवीआईएस की पुत्री

पुष्प
वैज्ञा/इंजी-एसडी
एलवीआईएस

जीत का जोश: एसएसएलवी से अनुभव

"सफलता वहाँ तक नहीं आती जहाँ लोगों के दिल में चाहत नहीं होती, बल्कि जहाँ कठिनाइयों और परेशानियों से लड़ने की ताकत होती है।"
– विवेकानंद

मेहनत जीवन के हर क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस दुनिया में कुछ भी पाने के लिए मेहनत एक आवश्यक गुण है। कोई भी बड़ी सफलता बिना मेहनत के हासिल नहीं हो सकती। मेहनत एक निरंतर अभ्यास और समझौता का नाम है। इससे न केवल आप अपने लक्ष्यों की तरफ बढ़ते हैं, बल्कि आपके खुशहाल जीवन जीने के लिए बेहतर तरीकों का भी पता चलता है। इसलिए, हमेशा अपने लक्ष्य के प्रति संकल्पित रहें और मेहनत के जादू का सही उपयोग करें।

ऐसे ही किसी तकनीक के डिजाइन में महत्वपूर्ण भूमिका मेहनत, पुनर्स्थापनशीलता और स्थायित्व की होती है। एक अच्छा डिजाइन बनाने के लिए इन तीनों गुणों का समन्वय बहुत आवश्यक होता है। मेहनत जो आप अपने काम में लगाते हैं, वो आपके निर्माण के विवेक और शुद्धता को सुनिश्चित करता है। पुनर्स्थापनशीलता का अर्थ होता है कि जब कुछ गलत हो जाता है, तो आप वहाँ से हार नहीं मानते। आपको उस गलती से सीख लेना चाहिए और फिर दोबारा से अपना काम करना चाहिए। स्थायित्व से आप

सफलता तक पहुँच सकते हैं। अगर आप एक अच्छे डिजाइन तक पहुंचना चाहते हैं, तो आपको अपनी मेहनत, टेक्नोलॉजी पर आधारित जानकारी और निरंतर योगदान से नहीं हटना चाहिए।

अगर आप मेहनत करते हैं तो कुछ भी संभव है। इसी का उदाहरण अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियों की लगातार बढ़ती सूची है। भारत ने अपने स्वदेशी उपग्रह निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से एक बड़ा नाम बनाया है, जिसका सम्मान दुनिया के सभी देशों ने किया है। उपग्रह उड़ाने की क्षमता के मामले में भारत के सामने कुछ मुश्किलें आईं थीं, लेकिन इसरो के इंजीनियरों ने मेहनत और आत्मविश्वास से इन मुश्किलों का सामना किया और उन्हें सफलता के मार्ग पर लाकर दिखाया। उदाहरण के रूप में, इसरो ने लगातार उपलब्धियाँ हासिल की हैं। जैसे कि 2022 में शुरू हुए एसएसएलवी कार्यक्रम के दौरान पहले प्रयोगात्मक उड़ान के दौरान असफलता प्राप्त हुई थी, लेकिन उन्होंने अपने उत्साह और मेहनत से ज़रूरी संशोधन करके दूसरी उड़ान उत्तरदायी तरीके से सफल बनाई। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा मेहनत और आत्मविश्वास से संघर्ष करना चाहिए।

एसएसएलवी-डी 1 की पहली उड़ान 7 अगस्त 2022 को पहले प्रमोचन मंच से आयोजित की गयी थी, लेकिन यह अंतरिक्ष में नहीं पहुंच पाया। एक विशेषज्ञ पैनल ने इस विफलता की जाँच की और निर्धारित किया कि प्रमोचन यान अस्वीकार्य ऑर्बिट में क्यों प्रवेश कर गया था। छोटे-से सुधारों के बाद और सुधारों की जाँच के बाद, इसरो ने जल्द ही एसएसएलवी की अगली उड़ान की घोषणा की, और एसएसएलवी-डी 2 की दूसरी उड़ान 10 फरवरी, 2023 को हुई। अपनी दूसरी विकासात्मक उड़ान में, एसएसएलवी-डी2 वाहन ने ई ओ एस-07, जानस-1 और आज़ादी सैट-2 उपग्रहों को उनकी इच्छित 450 किमी वृत्तीय उपग्रह में 37 डिग्री के उड़ान पर रखा। यह सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के पहले प्रमोचन मंच से 09:18 बजे भारतीय मानक समय पर हुई और उपग्रहों को अपनी कक्षा में पहुँचने में लगभग 15 मिनट लगे।

जब रॉकेट से आखिरी सैटेलाइट अलग हुआ, तब नियंत्रण कक्ष में हर्ष और उल्लास का माहौल था, और प्रमोचन मंच से कुछ किलोमीटर की दूरी पर दर्शक दीर्घ में सैकड़ों विद्यार्थियों ने प्रमोचन आनंद लिया।

सफल प्रमोचन के साथ भारत को उद्योग की मांग पर छोटे उपग्रहों के वाणिज्यीकरण का लक्ष्य रखने वाला एक नया प्रमोचन यान मिल गया है। इसरो छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में चलाने की तेज़ी से बढ़ती दुनियाभर की माँग को पूरा करने के लिए आगे बढ़ रहा है। इसरो के लोगों की मेहनत और बुद्धि ने लघु उपग्रह प्रमोचन यान (एसएसएलवी) की उड़ान को सफल बनाया है। वे कठिनाई के बीच भी नहीं हारे और उनकी मेहनत ने इसे सफलता तक पहुँचाया। इससे स्पष्ट होता है कि मेहनत से सब कुछ संभव है।

जीवन में कुछ भी संभव है, यह सब के लिए एक मुख्य तत्व है। यदि हम दृढ़ता से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हैं और मेहनत करते हैं तो कुछ भी हासिल किया जा सकता है। हमेशा ज़मीन पर रहकर बड़े सपने देखना बहुत ज़रूरी है। हम अपने आप में विश्वास रखें लेकिन अगले कदमों के लिए भी समय-समय पर पूरी तरह से तैयार रहना चाहिए। बहुत से लोगों के सपने विफल हो जाते हैं क्योंकि वे अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए जमीन पर खड़े होकर कुछ नहीं करते हैं। दूसरी तरफ, कुछ लोग अत्यधिक ऊँचाईयों की तलाश में निरंतर उछलते रहते हैं लेकिन अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में संतुष्ट नहीं हो पाते हैं। अगर हम ज़मीन पर खड़े होकर अपने सपनों का पीछा करें तो हमें उस ऊँचाई तक पहुंचने के लिए सही दिशा-निर्देश मिलेंगे और हमें संभवतः उस तक पहुँचने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे। हमें कभी भी हार मानने की जगह सफलता की तलाश में सफर करते रहना चाहिए। जैसा कि वे कहते हैं, बड़े सपनों से ही बड़ी सफलता मिलती है! •

मानसी

षीजा जॉय
वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

आज काफी व्यस्त दिन था। जिला कलेक्टर मानसी अपनी कक्ष में बैठी आखिरी फाइल पर दस्तखत कर रही थी। एक किसान की याचिका थी। उसके परिवार पर हुए जुल्म की तस्वीर क्या थी, इंसाफ की दुहाई दे रहा था वह। मानसी ने उस फाइल पर तुरंत कार्रवाई की टिप्पणी लिखी और फाइल बंद करके वह अपने अतीत के झरोखे से अंदर झांकने लगी।

बरसों पहले की बात है, जब मानसी चौथी कक्षा में पढ़ती थी। उसके पिताजी एक किसान थे। चार बीघा ज़मीन थी उनकी। माँ बाबूजी खेती कर अपनी बेटियों को पढ़ा रहे थे। मानसी की बड़ी बहन पायल आठवीं में थी। वह दिखने में काफी सुन्दर भी थी। माँ बाप काफी नाज़ों से अपनी बेटियों को पाल रहे थे।

एक दिन बाबूजी शाम को खेतों से आकर माँ से बोले अगले महीने बड़े भैया की बड़ी बेटी की शादी है। शादी में हमें जाना है। दो दिन वहाँ रहना भी है। इसलिए आने वाले दिनों में बाज़ार जाकर अपने लिए व बच्चियों के लिए कपड़े व आभूषण खरीद लें। मानसी को यह सुनकर काफी खुशी हुई। ताऊजी का घर, अगले गाँव में है। काफी बड़ा घर है। ताऊजी काफी पैसे वाले हैं। सारे रिश्तेदार आएँगे शादी में। बड़ा मज़ा आएगा। मानसी ने दीदी से यह बातें बोलीं, दोनों बहनें काफी खुश हुईं।

अगले महीने, नियत समय पर मानसी का परिवार शादी वाले घर पहुँच गया। सारे रिश्तेदार आए हुए थे। बच्चों की मंडली जुट गई। औरतें रसोई और सजने धजने में जुट गईं। शादी खूब अच्छी तरह से संपन्न हुई। सब

थककर सो गए। अचानक आधी रात में किसी लड़की की ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ से सबकी नींद टूट गई। घर के बाहर आकर देखा तो तीन चार पिय्यकड़ लड़के, एक लड़की को खींचते हुए खेतों की तरफ ले जा रहे थे। लड़की ज़ोर से चिल्ला रही थी। अचानक बाबूजी चिल्लाए "पायल! अरे कोई तो मेरी बेटी को बचाओ।" पर डर के मारे कोई आगे नहीं आया। बाबूजी फावड़ा लेकर लड़कों के पीछे भागे, पीछे रोती हुई माँ भी भागी। लड़कों से भिड़न्त हो गई। किसी लड़के ने फावड़ा छीनकर बाबूजी के सिर पर दे मारा। सिर से खून का फव्वारा निकल पड़ा, बाबूजी नीचे गिर गए। घबराकर लड़के दीदी को वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए। तब सारे रिश्तेदार वहाँ आए और बाबूजी को लेकर अस्पताल गए। सिर पर चोट लगने से एवं काफी सारा खून बह जाने के कारण, बाबूजी को लकवा मार गया। बड़ी मुश्किल से उनकी जान बच पाई। माँ मुझे, दीदी एवं बाबूजी को लेकर वापिस हमारे गाँव आ गई।

अब माँ अकेले ही खेत जाया करती। मानसी और पायल पहले की तरह स्कूल जाने लगे। पर धीरे-धीरे गाँव में यह बात फैल गई कि पायल का बलात्कार हुआ है और उसी कारण उसके पिताजी को लकवा मार गया। माँ ने और मानसी ने लोगों का काफी समझाया कि ऐसा कुछ नहीं हुआ पर कोई मानने को तैयार नहीं हुआ। जितने मुँह उतनी बातें। एक दिन पायल दीदी रोते हुए घर आई। लाख पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया। सिर्फ पिताजी के सीने पर सिर रखकर रोती रही। और रात में सभी के सो जाने पर उन्होंने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली। दीदी के जाने के दु:ख को बाबूजी भी नहीं झेल सके और वे भी चल बसे।

माँ को फिर उस गाँव से कोई चाह नहीं रही और सबकुछ बेचकर हम शहर चले आए। मात्र कुछ ही दिनों में हमारा सुखी परिवार टूट चुका था। माँ अपनी माँग का सिंदूर और अपनी कोख दोनों गँवा चुकी थी। बिलकुल चुप सी हो गई। शहर में अमीरों के घर काम करके माँ घर चलाने लगी। मानसी को अच्छे से स्कूल में दाखिल भी करा दिया।

एक दिन माँ मानसी से बोली-"बेटा! हमारे साथ बहुत अन्याय हुआ है। तेरी दीदी की कुछ भी गलती न होने पर भी गाँव वालों ने उस पर लाँछन लगाए। मेरी फूल सी बेटी को उन लोगों ने मानसिक रूप से मसल डाला। तू मुझसे वादा कर तू किसी भी लड़की को ज़िंदगी में ऐसा कुछ होने ना देगी। हर दुखी परिवार को तुझ से जितना हो सके, उतना साथ देगी व न्याय दिलाएगी।"

मानसी बहुत छोटी थी। पर माँ ने जो कहा वह उसने अपने मन में गाँठ बाँध ली। न्याय दिलाना है। अन्याय नहीं होने देना है।

कलेक्टर मानसी अतीत के झरोखे से बाहर निकल वर्तमान में आ पाई। अपनी सशक्त मेहनत से, मानसी आईएएस की परीक्षा पास करके, कलेक्टर बन गई। उसने कलेक्टर बनने के बाद सबसे पहले महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके पुन: अविरक्षण के लिए कार्यक्रम तैयार किए। मानसी ने ठान लिया था कि दुबारा किसी पायल को आत्महत्या नहीं करना पड़े। •

जिस दिन एक सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जाए तब मान लीजिएगा कि आप कामयाब हो गए।

* * * * * * * * * * * * *

सपनों को सच करने से पहले सपनों को ध्यान से देखना होता है।

अब्दुल कलाम

कुट्टिमम्मद सी
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, आईएसपीई

मेरा प्यारा कश्मीर

यह एक मनोरंजक यात्रा है। इसमें कुछ छोटे अनुभव भी शामिल हैं जिन्हें आप भी समझ सकते हैं। मैं उस समय इसरो उपग्रह केंद्र बैंगलूरु में काम करता था। यात्रा बैंगलूरु से शुरू होती है और कश्मीर तक जाती है। यात्रा में हम चार परिवार साथ थे। हम सब एक ही उम्र के थे, सभी के साथ दो-दो बच्चे थे। सभी मित्रों में आपस में बहुत अच्छी दोस्ती थी। हमारी नई यात्रा के दौरान सभी अत्यंत खुश हुए। यह यात्रा 2006 में एलटीसी से थी और एयर इंडिया टूर नॉर्थ इंडिया प्लान में थी।

भारत सरकार ने कश्मीर में पर्यटन को बढ़ावा देने और कश्मीर के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए यह उत्तर भारत LTC पैकेज घोषित किया था। इस टूर पैकेज में दिल्ली-कश्मीर और कश्मीर में ठहराव और उन्हें घूमना खाना सभी एयर इंडिया द्वारा उपलब्ध कराया गया था। बैंगलूर-दिल्ली यात्रा हमें ट्रेन मार्ग से ही करनी थी। इसलिए हमने बैंगलूरु से दिल्ली तक की यात्रा राजधानी एक्सप्रेस द्वारा की थी। इस यात्रा में हमें बहुत मज़ा आया। सभी लोग ट्रेन में यात्रा करते हुए बहुत आराम करते हुए भी अब गए थे। जहाँ फ्लाइट यात्रा के दौरान कुछ लोगों को उत्तेजना महसूस हुई थी। हम दिल्ली से कश्मीर हवाई अड्डे पर उतर चुके थे। टूर ऑपरेटर ने हम चारों परिवारों को अलग- अलग एक-एक वाहन में सवार कराया। हम सभी ने डाल झील में बोट हाउस में रहने के लिए पहले ही बुकिंग कराई हुई थी।

हमारे गाड़ी चालक ने हमें बताया कि हम शालीमार बाग चलें, और बाद में हम बोट हाउस वापस जा सकते हैं। हमारे अन्य दोस्त और उनके परिवार हमारे साथ नहीं थे। हमें हिंदी नहीं आती थी। उसने कहा यह बाग बोट हाउस के पास है, इसलिए आप चिंता न करें, मैं देखभाल करूंगा। समय दो बजे था। हमने गाड़ी से उतरने की सहमति दी।

खाने के बाद, हम बाग में चले गए और वहाँ बच्चे खेल रहे थे। हम उनके खेल का वीडियो कैमरे से शूटिंग कर रहे थे। वे

खूबसूरत मुग़ल बाग में दौड़ रहे थे। हमने वहाँ बहुत सारे वीडियो लिए, सुंदर फूल, लैंडस्केप, झाड़ियां इत्यादि। मेरी पत्नी और बच्चे उन पलों में बहुत खुश थे।

छः बजे शाम को, हम वापस गाड़ी के पास आ गए जहाँ ड्राइवर इंतजार कर रहा था। डल झील पर सूर्यास्त का भी शूट हमने किया था। जब हम डल झील के किनारे पहुँचे, तब हमें अपने बोट हाउस तक पहुँचने के लिए कोई शिकारा नहीं मिला। रास्ते में हमने कई सैनिकों और सैन्य वाहनों को देखा जो अपने हथियारों के साथ कुछ खोज रहे थे और टैंक और जीपों को ढँक रहे थे। उस समय कश्मीर आतंकवादियों की गतिविधि के लिए कुख्यात था।

हम वहाँ बहुत देर तक इंतज़ार करते रहे, लेकिन कोई नावें नहीं थीं। हम अपनी समस्या को संबोधित नहीं कर सकते थे। कुछ लोग हमारी मौजूदगी के बारे में बात कर रहे थे। अंततः, उन्होंने हमें कहा "आप इस नाव से चले जाओ, आगे आप अपने हाउसबोट तक पहुंच सकते हो, आपके लिए अभी कोई नावें उपलब्ध नहीं हैं"। हम देर रात में अपने दोस्तों और टूर ऑपरेटर से कोई संवाद नहीं कर सके। बारिश हो रही थी और बिजली गिर रही थी। हम एक अजनबी जगह पर थे, हमें सूझ नहीं रहा था कि हमें क्या करना चाहिए। मैंने अपने भय की बात अपनी पत्नी से नहीं कही। वह समझ गई कि हम मुश्किल में आ गए हैं, लेकिन उसने भी अपने आपको सँभाला। हम एक अज्ञात गंतव्य पर पहुंचे, लोगों को हमारे बारे में पता चला तो उन्होंने मीठे शब्दों से हमारा स्वागत किया।

उन्होंने हमें पेय पदार्थ और नाश्ता दिया और हमसे आराम करने के लिए कहा। कश्मीर में रात ग्यारह बजे भी हमें पसीना आ रहा था। मैं किसी भी परिचित चेहरे को नहीं देख सकता था। मेरे दोस्त वहाँ थे, लेकिन मुझे पता चला कि हम अलग जगह हैं। एक श्री ग्रोवरजी, जो इस क्षेत्र के टूर ऑपरेटर थे। हमारे लापता होने की जानकारी हासिल की और हमारे टूर ऑपरेटर को सूचित किया और कहा कि मैं आपके बोट हाउस तक यहाँ से नाव व्यवस्थित कर दूंगा। उन्होंने मुझे बताया कि आप यहाँ से कॉल कर सकते हैं, एक लैंड फोन उपलब्ध है। मैंने अपने दोस्त अरविंद को कॉल किया, जिसमें ग्रुप में केवल एक मोबाइल फोन था। लेकिन भारी बारिश और गरज के कारण कुछ भी स्पष्ट नहीं था। किसी तरह यह संदेश हमारे टूर ऑपरेटर और अरविंद को दिया गया कि हम यहाँ सुरक्षित हैं। फिर श्री ग्रोवर और उनके लोग हमारे लिए बहुत उदार थे और हमें हमारे बोट हाउस तक पहुँचने में मदद की। हम चारों और दो अज्ञात लोगों के साथ नाव में थे, कोई एक दूसरे से बात नहीं कर रहा था, फिर भी मैं भीतर से काँप रहा था। रात में दो बजे हम पहुंच गए, सभी हमारे इंतजार में थे, भारी बारिश और गरज के बीच। यात्रा के हमारे दोस्तों की आवाज़ में खुशी भी थी, और उनकी आँखों में खुशी के आँसू भी थे।

अपनी यात्रा के शेष भाग में हमें कोई परेशानी नहीं हुई और हमने कश्मीर की यात्रा का शानदार अनुभव किया। •

लक्ष्मी जी
सहायक निदेशक (रा.भा)

जीवन की सच्चाई

भाषा अनेक; शब्द हज़ार; फिर भी बोलो,
आशा और आकांक्षा का क्या है कोई द्वार?

दिल से बोलने-सुनने की कला कहां सिखाती है;
दिमाग को तेज़ करने की दवा विज्ञापनों में दिखती है।

खामोशी को समझनेवाला कोई हो तो, जीवनभर
खामोश रहना है मंज़ूर, चाहे गूंगी बुलाए मुझे संसार।

अपने विचारों को शब्दों में बदलने पर
अपने भी चले जाते हैं झगड़कर।

समझते हैं उनकी बुराई की जाती है;
समझते नहीं कि यह मेरी तन्हाई है।

डूब जाने पर जान बचाना है खुद की;
आए न आए हमें तैराकी।

आग को छूओ, जलन का मिलता है अनुभव
आपबीती हो तो कुछ नहीं रहता असंभव।

स्वानुभव ही सबसे बड़ा सबूत
साकार दिखता है सच और झूठ।

अपना हो तो आंखों में दर्द भरा रहता है;
अन्य का खून रंगीन नज़र आता है।

सच्चाई है यह जीवन की; हमेशा की तरह
सच्चाई कड़वी और कुरूप होती है।

कड़वेपन में छिपी रहती है औषधि;
रूप नहीं, महत्वपूर्ण है किसीकी घी। •

प्रशासनिक शब्दावली / ADMINISTRATIVE GLOSSARY

Fingerprint - अंगुलिछाप
Financial - वित्तीय
Fire control instrument - अग्नि-नियंत्रण उपकरण
Firefighting - अग्निशमन
Fire safety officer - अग्नि संरक्षा अधिकारी
Fire service - अग्निशमन सेवा
Fitness certificate - स्वस्थता प्रमाणपत्र
Fixation of pay - वेतन-नियतन
Fixed pay - नियत वेतन
Forecast - पूर्वानुमान
Formal - औपचारिक
Freight charges - माल-भाड़ा
Fuel - ईँधन
Fulltime - पूर्णकालिक
Fundamental rights - मूल अधिकार
Gazetted - राजपत्रित
Gazette notification - राजपत्र अधिसूचना
Glossary - शब्दावली
Governing body - शासी निकाय
Graduate - स्नातक
Graft - रिश्वत
Grantee - अनुदानग्राही
Gratuity - उपदान
Guardian - संरक्षक
Half pay leave -अर्ध वेतन छुट्टी
Half yearly report - अर्धवार्षिक रिपोर्ट
Harassment - उत्पीड़न
Harbour - बंदरगाह
Heal insurance - स्वास्थ्य बीमा
High priority - उच्च प्राथमिकता
Honest -ईमानदार
Honourable - माननीय
House journal - गृह पत्रिका
Humane - मानवोचित
Illegal -अवैध
Immediate action - तत्काल कार्रवाई
Immovable property - अचल संपत्ति
Impartiality - निष्पक्षता
Implementation - कार्यान्वयन
Imprest amount - अग्रदाय राशि
Incentive Scheme -प्रोत्साहन योजना
Inconvenience - असुविधा

टिप्पणियां / NOTINGS

1. स्वीकार किया गया -
   Acceded to
2. तदनुसार सूचित करें -
   Advice accordingly
3. बैठक की कार्यसूची -
   Agenda of the Meeting
4. यथा संशोधित -
   As amended
5. निदेशानुसार -
   As directed
6. यथा प्रस्तावित -
   As proposed
7. उक्त अवधि के बाद -
   Beyond the said period
8. परिचालित कर फाइल करें -
   Circulate and then file
9. प्रतिलिपि संलग्न है -
   Copy enclosed
10. विलंब के लिए खेद है -
    Delay is regretted
11. विसंगति का समाधान किया गया -
    Discrepancy may be reconciled
12. मसौदा संशोधित रूप में अनुमोदित -
    Draft approved as amended
13. अनुवर्ती कार्रवाई -
    Follow up action
14. विचारार्थ -
    For consideration
15. आगे और आदेश भेजे जाएँगे -
    Further orders will follow
16. अवैध सौदे -
    Illegal transaction
17. आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में -
    In anticipation of your approval
18. के अनुपालन में -
    In compliance with
19. के परिणामस्वरूप -
    In consequence of
20. कर्तव्य पालन में -
    In discharge of duties
21. की अपेक्षा -
    In preference to
22. यथासंशोधित जारी कीजिए -
    Issue as amended
23. ध्यान दें -
    Nota bene (N.B)
24. औपचारिक मंज़ूरी प्राप्त करें -
    Obtain formal sanction
25. को देखने का कष्ट करें -
    Reference is invited to
26. पड़ताल की और ठीक पाया -
    Verified and found correct
27. पूर्वव्यापी प्रभाव सहित -
    With retrospective effectt

अंतरिक्ष शब्दावली / SPACE GLOSSARY

Meridional - रेखांशिक
Metallisation – धातुलेपन
Metatrophy – भौतिक रूपांतरण
Meteorologist – मौसम विज्ञानी
Metering pump – मापन पंप
Method – विधि
Microbeam - सूक्ष्म किरम पुंज
Micro-level – सूक्ष्म स्तर
Microscope – सूक्ष्मदर्शी
Milestone – उपलब्धि
Minimization – न्यूनतमीकरण
Mission – अभियान
Mobility – गतिशीलता
Mobilization – गतिशीलन
Modification –आपरिवर्तन
Moisture – नमी
Molecular – आण्विक
Moment – आघूर्ण
Moment of inertia – जड़त्व आघूर्ण
Monofilament – एकतंतुक
Morphology – आकृतिविज्ञान
Motion – गति
Motor assembly – मोटर समुच्चय
Multicarrier – बहुवाहक
Multilevel – बहुस्तरी
Multiple dimension – बहुविमा
Multiple injector – बहु अंत: क्षेपित्र
Multiplexer – बहुसंकेतक
Multipurpose – बहु उद्देशी
Multivibrator - बहुकंपित्र
Navigation satellite – नौसंचालन उपग्रह
Negative absorption – ऋणात्मक अवशोषण
Night glow - निशा दीप्ति
Nodular – ग्रंथिक
Noise frequency – रव आवृत्ति
Non-linear – अरैखिक
Non-coiling - अकुंडलन

राजभाषा प्रश्नोत्तरी

1. पहली संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में कब अंगीकार किया?
2. संसदीय राजभाषा समिति अपनी रिपोर्ट किसको प्रस्तुत करती है?
3. भाषाई दृष्टि से बैंगलूरु किस क्षेत्र में आता है?
4. संविधान की 8वीं अनुसूची में कितनी भाषाओं को सम्मिलित किया गया है?
5. राजभाषा अधिनियम कब बनाया गया?
6. राजभाषा नियम कब बनाया गया?
7. राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु पूरे भारत को कितने भाषाई क्षेत्रों में बाँटा गया है?
8. राजभाषा नियमों के अनुसार किसी कार्यालय में राजभाषा संबंधी नियमों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी किसपर है?
9. राजभाषा नियम के नियम 5 के मुताबिक हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर किस भाषा में दिए जाने चाहिए?
10. संविधान के भाग 17 की धारा 351 के अनुसार राजभाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार की ज़िम्मेदारी किसपर है?
11. धारा 3(3) के दस्तावेज़ों को द्विभाषी रूप में अनिवार्य रूप से जारी करने की ज़िम्मेदारी किसपर है?
12. दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी पर
13. 'ग' क्षेत्र में कितना प्रतिशत पत्राचार द्विभाषी में किया जाना है?
14. 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों द्वारा कम से कम कितना प्रतिशत टिप्पणी हिंदी में किया जाना है?
15. राजभाषा विभाग किस मंत्रालय के अंतर्गत आता है?

उत्तर

1. 14 सितंबर, 1949
2. राष्ट्रपति को
3. 'C' क्षेत्र 'ग' क्षेत्र
4. 22
5. 1963
6. 1976
7. 3 (तीन)
8. प्रशासनिक प्रधान
9. केवल हिंदी में
10. संघ सरकार पर
11. दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी पर
12. 55%
13. 30%
14. गृह मंत्रालय
15. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना

पुष्प
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एलवीआईएस

करीबन चार वर्ष पहले, जब मैं दिसंबर, 2018 में पहली बार दिल्ली से एक लंबी उड़ान के बाद केरल पहुँची, तो मेरे लिए यह एक पूरी तरह से अज्ञात क्षेत्र था। न ही इधर कोई जान-पहचान के दोस्त थे, न ही कोई अन्य रिश्तेदार। सब कुछ नया और अनजान था। नई जगह, नई भाषा, नया खान-पान, नए चहरे और नए लोग। बस यदि एक चीज़ नई नहीं थी, तो वह थी मैं खुद और मेरे सपने। वह सपने जो कई सालों से धीमी आँच पर पकाए गए थे। और बस उन सपनों ने ही मुझे हिम्मत व हौसला दिया घर परिवार के प्यार से 3000 कि.मी. दूर एक नई चुनौती को स्वीकार करने के लिए।

परंतु देखिए कि यही समय का भी अनोखा ही खेल है। दिन, वर्ष, मास कैसे बीते पता ही नहीं चला। पता ही नहीं चला कि कैसे मैं केरल और उसके लोगों से और नज़दीकी से जुड़ती चली गई। केरल में प्राप्त हुए हर एक अनुभव ने मेरे जीवन में बेहद मूल्य जोड़ा है और मुझे एक बेहतर इंसान बनाने में योगदान किया है।

अनुभवों की बात करें तो सबसे मूल्यवान अनुभव वे थे जो मुझे नेविगेशन विभाग में तैनात होने के कारण, अपने काम के कारण मिले। उड़ान यानों में नैविगेशन सॉफ्टवेयर के निर्माण पर काम करना और भारत के सबसे उत्कृष्ट मस्तिष्कों से सीखने का मौका पाना तो एक सपना साकार होने के समान ही है। केरल के सुंदर अनुभवों के खज़ाने को और सुंदर कर दिया उन नए लोगों ने, जिन्हें पहली बार मैं यहाँ पर मिली। हर प्रकार के लोग-दयालु, समझदार और कुछ बेहद मज़ेदार। और, इनमें से कुछ लोगों में मुझे जीवन भर के दोस्त प्राप्त हुए। इसके अलावा मैं तो अब केरल के खाने की भी शौकीन ही चुकी हूँ। देसी घी में लिपटे हुए घी-रोस्ट डोसा, फिल्टर कॉफी, अलग-अलग प्रकार के तोरन और हॉ, सद्या की तो बात ही अलग है।

और मैं पूरी तरह से यकीन कर चुकी हूँ कि केरल जैसी सुंदरता वाली जगह इस पूरी दुनिया में कोई भी और नहीं है। हरे-भरे पहाड़ों से लेकर खारे समुद्रों तक, केरल की सुंदर धरती अपने आप में ही एक चमत्कार है। केरल की सुंदरता जैसा कुछ भी अन्य नहीं है। केरल की धरती की सुंदरता को और भी अनमोल बनाते हैं यहाँ के लोग और संस्कृति। आई बात भाषा की तो इन चार सालों में मैंने भी थोड़े बहुत मलयालम शब्द सीख लिए हैं। क्या कहते हैं-'कुछ-कुछ मलयालम' और भी ऐसी ही कई रोचक शब्द मेरी रोज़ाना शब्दावली का एक हिस्सा बन चुकी है।

यह बात स्पष्ट है कि केरल अपने खूबसूरत स्थानों, प्राकृतिक सौंदर्य और विविध संस्कृति के लिए मशहूर है और इसकी संस्कृति व लोग मोहित कर लेने वाले हैं। यहाँ के त्योहार, जैसे कि ओणम, विषू भी बहुत दिलचस्प तरीके से मनाए जाते हैं और इनके पीछे बहुत सी कहानियाँ अथवा महत्व भी जुड़े हुए हैं। कभी अगर सोचती हूँ तो हैरानी होती हूँ कि ये चार साल कैसे पलक झपकते ही गुज़र गए। आज भी लगता है मानों कि अभी वह कल की ही तो बात है, जब केरल में पहली दफा कदम रखा था और सब कुछ नया व अज्ञात था। और कुछ भी तो, यह चुनौती मुझे देने के लिए मैं भगवान की आभारी हूँ कि अब वही सब नए चहरों में अपनापन दिखता है, और अब केरल मुझे अपने दूसरे घर के समान लगता है। •

भारत में गरीबी मिटाने के सार्थक उपाय

सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसपीई

जब भारत का नाम पाश्चात्य देशों में लिया जाता है तो पहली बात जो उनके मन में आती है- वह है भारत का संस्कार। दूसरी चीज़ होती है - भारत की गरीबी। मुंबई के गरीबों की गलियों के चित्र, सड़क में भीख माँगते हुए लोगों के चित्र, भूख को मिटाने के लिए काम करने वाले बच्चों के चित्र, दूध पीने वाले बच्चे के भूख मिटाने के लिए भीख माँगने वाली माँ का चित्र, रेलवे स्टेशन में दूसरों के छोड़े गए आहार में अपने भूख मिटाने के लिए कुछ खाना ढूँढ़ते हुए लोगों के चित्र। ये सब दुर्भाग्यवश कुछ काल्पनिक चित्र नहीं हैं। यह भारत की एक ऐसी सच्चाई है जो हम भारतीयों के सिरों को झुका देता है।

एक तरफ हमारी संस्कृति और भाईचारे पर हमें गर्व है तो दूसरी तरफ भारत की गरीबी हमें लज्जित करती है। अंग्रेज़ों के आने के पहले भारत में गरीबी इतनी नहीं थी। अंग्रेज़ों के कुशासन ने भारत की आर्थिक व्यवस्था को नष्ट कर डाला। जब 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली तब भारत बहुत ही बुरी अवस्था में था। धर्म के नाम पर आपसी मतभेद ज़्यादा था। भारत में कृषि के ज़रिए ज़्यादातर लोग अपनी आमदनी कमाते हैं। इस कारण गाँधीजी ने कहा है कि अगर भारत का विकास होना है तो कृषि के विभाग में ज़्यादा तरक्की होनी चाहिए।

अगर सरल भाषा में सोचा जाए तो गरीबी का वास्तविक कारण क्या है? गरीबी का कारण है पैसे का अभाव। हर एक घर में ऐसा एक आदमी य़ा औरत होना चाहिए जो पैसा कमाता हो। अगर एक घर में कोई पैसा नहीं कमाता है जो निस्संदेह उस घर में गरीबी होगी। आमदनी पैदा करने के लिए नौकरी की ज़रूरत है। नौकरी पाने के लिए पढ़ाई की ज़रूरत है।

सरकारी स्कूलों में फीस भरने की ज़रूरत नहीं है। यही नहीं बच्चों को वहाँ पर मुफ्त में खाना भी मिलता है। इस कारण हर माता-पिता का कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए स्कूल भेजे। इससे वे बड़े होकर कुछ न कुछ नौकरी कर सकते हैं और अपने घर की गरीबी मिटा सकते हैं। अगर माता-पिता अशिक्षित हैं तो वे कुछ श्रम के काम करके आमदनी कर सकते हैं और अपने परिवार को गरीबी से बचा सकते हैं।

व्यवस्था के क्षेत्र में विकास हो तो लोग ज़्यादा काम पा सकते हैं और गरीबी कम कर सकते हैं। जैसे तिरुवनंतपुरम में जब लुलु मॉल शुरू हुआ तो उस प्रदेश के हज़ारों लोगों को नौकरी मिली। भारत में औरतों के काम करने के विरुद्ध एक भावना पुरुषों में हैं। यह सही नहीं है। जहाँ जनसंख्या का आधा हिस्सा (औरतें) बेकार हो तो गरीबी दूर नहीं हो सकती है। हर घर में औरतों को शिक्षा देनी चाहिए। •

आनंद की खोज

प्रेम प्रकाश
वरि. तकनीकी सहायक -ए
आरक्यूए

एक नगर का राजा था, जिसे ईश्वर ने सब कुछ दिया। उनके पास एक समृद्ध राज्य, सुशील और गुणवती रानी एवं एक संस्कारी संतान सब कुछ थे। इसके बावजूद वह दुखी का दुखी रहता। एक बार वह भ्रमण करता हुआ एक छोटे से गाँव पहूँचा। वहाँ उसने मंदिर के बाहर एक दृश्य देखा । एक कुम्हार मंदिर की सीढ़ियों पर बैठा मटकियाँ बेच रहा था। कुछ मटकियों में पानी भी भरा था। मंद मंद पवन की लहरों को महसूस करता हुआ वह मधुर स्वर में हरिभजन भी गा रहा था।

राजा ने मंदिर में प्रवेश कर श्रीहरि के दर्शन किए और बाहर आकर उस कुम्हार के समीप बैठ गया। कुम्हार ने राजा का स्वागत कर उन्हें मटके का पानी पिलाया। राजा ने मन ही मन सोचा इन तुच्छ मटकों को बेचकर यह किसान क्या ही कमाता होगा? पैसे का कितना अभाव है इसे? तत्क्षण राजा ने कुम्हार से पूछा " हे प्रजापति! क्या तुम मेरे साथ नगर चलोगे?"

प्रजापति - "हे राजन ! मैं नगर में रहकर क्या करूँगा?"

राजा - "हे प्रजापति! तुम नगर में ढेर सारी मटकियाँ बनाना और खूब पैसा कमाना।"

प्रजापति - "हे राजन! मैं उन ढेर सारे पैसों का क्या करूँगा?"

राजा - "हे प्रजापति ! क्या मतलब पैसों का क्या करूँगा? पैसा ही तो सब कुछ है।"

प्रजापति - "हे राजन ! मुझे अभी तक उत्तर नहीं मिला कि ढेर सारे पैसों का मैं क्या करूँगा?"

राजा - "हे प्रजापति ! जो इच्छा हो वो करना तुम । अत्यधिक धन अर्जित कर सामुदायिक कीर्तन -भजन करना और आनंद में रहना ।"

प्रजापति - "हे राजन! निष्ठा और पूरी ईमानदारी से बताइए, मैं अभी क्या कर रहा हूँ?"

प्रजापति के इस प्रश्न ने राजा को भीतर से झकझोर कर रख दिया। तत्पश्चात राजा ने प्रजापति से कहा, " हे प्रजापति !आप सब कुछ भूलकर हरिभजन में लीन हैं। मैं देख सकता हूँ कि आप आंतरिक आनंद में विभोर हैं।"

तभी प्रजापति ने कहा, " हाँ यही तो मैं समझाने का प्रयास कर रहा हूँ कि आनंद पैसों से प्राप्त नहीं होता।"

राजा की आँखें खुल गई। वह प्रजापति से प्रभावित हुआ और उसने प्रजापति से पूछा, " आनंद की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

प्रजापति ने कहा, "हे राजन! ध्यानपूर्वक सुनें । अपने हाथों को ना फैलाएँ अपितु उन्हें उल्टा कर लें।"

राजा आश्चर्यचकित होकर "हाथों को उल्टा कर भला कैसे आनंदित हो सकते हैं।"

प्रजापति ने कहा, "हे राजन! माँगो मत,देना सीखो । जिसने भी देना सीख लिया, समझो उसने आनंद की राह पर कदम रख दिया। आज संसार के अधिकांश लोगों के दुख का कारण यह है कि जो कुछ और जितना भी उनके पास है, वे उससे खुश नही है और जो उनके पास नही है उसे प्राप्त करने की आपाधापी में समय व शरीर नष्ट कर दुःखी हैं। उनका मन स्वप्न में भी अशांत है। आनंद तो उनसे कोसों दूर है। ईर्ष्या और दर्भ को समावेश कर हम आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। जो कुछ और जितना भी हमारे पास है, उतने में ही संतुष्ट रहकर हम दुख से दूर रह सकते हैं। समय से पहले और भाग्य से ज्यादा हमें कुछ भी नहीं मिलता।"

प्रजापति के विचारों को सुनकर राजा सब समझ चुके थे। उनहोंने कुम्हार के वचनों पर मनन किया और दान करने की प्रवृत्ति अपना ली। अंतत वे आत्मसंतुष्ट रहने लगे।

शिक्षा: जो आत्मसंतुष्ट होते हैं, वही वास्तव में सुखी हैं। संतोष रूपी धन से सुशोभित लोग ही आनंदित हैं, वे ही सत्य अर्थों में राजा हैं। •

लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी-डी
एसआईएस

काला

कौआ हूँ मैं।
आप कहें तो
"काला कौआ"।

हम को काला क्यों
बोलते हैं आप लोग?
काले कौए से डरियो
ऐसे क्यों बोलते हैं?

हाँ यह बात सही है
कि आप हर बात में
ऐसा ही सोचते हैं।

काला तो सिर्फ
एक रंग है।
पर आप मानव के लिए
उस रंग की अलग- अलग
पहचान होती हैं।

काली - यानी कुरूप।
काला - यानी अंधेरा।
काला - यानि नापसंद।

क्या कभी आपने
हमें गौर से देखा है
हमारे पंखों को देखा है

इन्द्रधनुषी नीला,
बैंगनी, भूरे, हरे रंगों से
चमक - चमक चम – चम
हमारे पंखों को
क्या आप देखेंगे

रंग- बिरंगे पंखों को
देखने के लिए तो
आँखें खोलनी पड़ती हैं।

आप तो हमेशा
जाति-धर्म, रंग-धन
देखकर ही रिश्ते
जोड़ते हैं बनाते हैं।

रिश्ते तो हम
बनाते हैं।
जब कोयल आप की
मीठी -बोली कोयल
हमारे घोंसले में
अंड़े देती है तो
हम क्या करते हैं
क्या हम मूर्ख हैं
बिलकुल नहीं।

हम रिश्ते बनाते हैं
तोड़ते नहीं।
कोयल है क्या
कोई चिड़िया,
बच्चे तो बच्चे
होते हैं।

अपने- दूसरे
ये भेदभाव हम में
नहीं होता।
आप मानव ही
अपना - अपना कहकर
इस पर्यावरण को
इतना भंग कर रहे हैं।

हमारी भूमिका क्या है,
यह हम समझते हैं,
और करते भी ! निभाते भी ।
और आप लोग !
चाँद तक तो पहुँच है।
फिर भी मन में रोशनी
नहीं है अब तक।

भाई-भाई को मारते हैं।
जो भूखा है वो
हमेशा भूखा ही रहता है।
जो नंगा है वो
हमेशा नंगा ही रहता है।
जो अनपढ़ ही रहता है
जिसका कोई घर नहीं है
वो हमेशा बेघर ही रहता है।
और आप हमको बोलते है- 'काला'।

हम किसान के दोस्त हैं।
जो आप खाते हैं
उसके बीज वितरण में
हमारी भी भूमिका है।
हम वन को बढ़ाते हैं।
आप की तरह काटते नहीं हैं।
जो कुछ आप
इधर-उधर फेंकते हैं
उसकी भी साफ-सफाई
हम करते हैं।
सारी गंदगी हम लेते है
ताकि आप साफ रहें।
और आप हमें बोलते हैं-
"काला"
कहने का मतलब
यह है कि हम-
काले या सफेद
इस रंग से हमारी
पहचान मत कराओ।
रंग से किसी -की
पहचान नहीं होती है।

रंग से नहीं
कर्म से-
हर कोई का
पहचान होते हैं।

ऐ, मानव ! जागो !
मस्तिष्क 'ज़रूर'
काम करते हैं।
पर आपके मन को भी
जागना ज़रूरी है।

हम कौआ-
"रंग बिरंगे अभिमानी"•

मेरा ईश्वर मेरा विश्वास

अमृता ए पी
प्रकाश वी पी, वरि. सहायक,
पीजीए की पत्नी

मेघनाथ सूर्यकाशी राज्य के राजा थे। शांति और सुंदरता का पूर्ण स्वरूप था सूर्यकाशी राज्य। सभी लोग खुश थे। न जाने क्यों यह खुशी समय ज्यादा दिन नहीं रही। उस राज्य में बारिश की कमी महसूस होने लगी। राजा अपने देशवासियों की अवस्था पर अति दुखी थे। ऐसे कठिनाइयों से भरे दिन लोगों को सताते गए। तब राज्य के मंत्री ने राजा से कहा, "हमारे पड़ोस राज्य में एक किसान है जिसके गाने से बारिश शुरु हो जाती है"। पर राजा को उस बात का विश्वास नहीं हुआ। देशवासियों की कठिनाइयाँ बढ़ती गईं। राज गुरु ने वरुण देव को प्रसन्न करने के लिए पूजा करने का उपाय रखा।राजा उसी उपाय से सहमत थे।पूजा की तैयारियाँ शुरु की गईं। राजा को उस पूजा की फल प्राप्ति पर पूरा विश्वास था। पर पूजा करने के बाद भी बारिश नहीं हुई। राजा और भी दुखी हो गए। अंत में राजा ने निर्णय लिया कि वे पड़ोसी राज्य के किसान को किसी भी तरह अपने राज्य में लाएँगे। राजा ने अपने मंत्री से पड़ोसी राज्य के राजा से उस किसान को कुछ दिन के लिए अपने राज्य में भेजने की अनुमति देने का संदेश भेजने को कहा। मंत्री ने तुरंत संदेश भेजा। पर इस आदेश से राजगुरु निराश थे। वे पूजा करके बारिश करवाना चाहते थे।

उस किसान में खास बात थी कि जब भी गांव वालों को बारिश की ज़रूरत पड़ती तब वह गाकर बारिश करवा देता था।

इस लिए गाँव वालों को यह चिंता नही रहती थी कि उन्हें कभी बारिश की समस्या आएगी। राजगुरु तक भी यह समाचार पहुँच गया। उन्होंने उस किसान से मिलने का फैसला लिया। राजगुरु का मानना था कि इस तरह गाने से कुछ नहीं होगा। राजगुरु किसान के पास पहुँचे और दोनों में बहस हो गई और राजगुरु ने कहा कि अगर किसान के गाने से बारिश हो सकती है, तो उनके गाने पर भी बारिश हो सकती है। अगर उनके गाने पर बारिश नहीं होगी तो किसान के गाने पर भी बारिश नहीं होगी। बहस सुनकर बहुत लोग इकट्ठे हो गए। लोग वहाँ पर जमा हो गए और देखने लगे कि बारिश होगी कि नहीं।

राजगुरु ने गाना शुरु कर दिया। बहुत देर तक गाने के बाद भी बारिश नहीं हुई। आखिर वे हार मानकर बैठ गए। अब किसान ने गाना शुरु किया। दो घंटे बीतने पर भी बारिश नहीं हुई। किसान ने हार नहीं मानी और गाता रहा। गाते -गाते जब शाम हो गई तो बादल आ गए और बारिश होने लगी। तब राजगुरु ने किसान से पूछा कि आपके गाने से बारिश कैसे हो सकती है। किसान ने उत्तर दिया कि मैं तो सिर्फ भगवान का नाम मन में रखकर गाना शुरु करता हूँ। किसान ने कहा कि मैं भगवान से सिर्फ यह कहता हूँ कि मैं तब तक गाऊँगा जब तक बारिश नहीं होगी और जब बारिश हो जाएगी तब ही मैं गाना बंद करूँगा। शायद भगवान मेरी बात सुन लेते हैं और मेरी मदद करते हैं।

राजगुरु को अपने घमंड का एहसास हो गया । उनके सूर्यकाशी वापस आते ही वहाँ बारिश की बूँदें गिरने लगीं। राजा मेघनाथ का भी दिल भर गया । उनका विचार था कि उन्हें पूजा का फल मिल गया।

ईश्वर पर विश्वास रखें। वे सदा हमारी मदद के लिए किसी न किसी रूप में आएँगे। •

चुटकुले

बंदर की बेटी बंदर से बोली...
बेटी –पापा मेरी शादी करा दो
बंदर – अरे मेरी बेटी..
थोड़ा धीरे बोल..
थोड़ा सब्र कर..देख अभी तेरा दूल्हा मैसेज पढ़ रहा है
हंस गए तो समझो रिश्ता पक्का

शेर की शादी में एक कुत्ता पागलों की तरह नाच रहा था।
शेर ने पूछा- तू क्यों पागल हुआ जा रहा है? शादी तो मेरी हो रही है।
कुत्ता: शादी से पहले मैं भी शेर था।

दो कुत्ते आपस में लड़ रहे थे...
तभी उनका पापा आया...
कुत्ता: क्या बात है क्यों लड़ रहे हो दोनों...
पहला- बौउ बौहु
दूसरा- बौउ बौहु
पापा ने लाठी उठाई
बोलो किसको चाहिए बहु...

संता – आज सुबह से बड़ा उल्टा पुल्टा हो रहा है
बंता – ओये क्या हुआ तैनू
संता – सुबह एक बिल्ली मेरा रास्ता काट गयी
बंता – फिर क्या हुआ
संता – आगे जाके एक्सीडेंट हो गया
बंता – किसका तेरा ?
संता – नहीं बिल्ली का साला हमसे पंगा

दो आदमी आपस में बातें कर रहे थे...
पहला- ये 14 तारीख को क्या है?
दूसरा- ये बता तू शादीशुदा है या तेरी गर्लफ्रेंड हैं?
पहला- मैं शादीशुदा हूं
दूसरा - तो फिर तेरे लिए महावीर जयंती है।

2 चूहे शिकार करने जंगल गए
पहला – मैं पेड़ पर चढ़ जाता हूं
दूसरा – मैं झाड़ी के पीछे छिप जाता हूं
पहला – कोई आएगा तो मैं जाल उसके ऊपर फेंक दूंगा
दूसरा – ठीक है मैं फिर पीछे से आके दबोच लूंगा
जैसे ही एक हाथी पेड़ के नीचे से निकला
पहला – चूहा हाथी के ऊपर कूदा
दूसरा – दबा के रख साले तो मैं भी आ रहा हूँ

बाप- बेटा 5 के बाद क्या आता है?
बेटा- 6 और 7 पापा!
बाप- शाबाश... बेटा मेरा तो बहुत इंटेलीजेंट है अच्छा तो 6, 7 के बाद!
बेटा- 8, 9, 10 बाप- और उसके बाद?
बेटा- और उसके बाद गुलाम, बेगम और बादशाह!

मच्छर की शादी में एक हाथी उछल-उछल कर नाच रहा था...
ये देखकर एक मेंढक को अचंभा हुआ...
उसने पास जाकर हाथी से पूछा, हाथी भाई आप एक मच्छर की शादी में इतना उछल-कूद कर क्यों नाच रहे हो...
हाथी बोला... बेवकूफ नाच नहीं रहा हूँ... कुछ मच्छर शराब पीकर नाक कान में घुस गए हैं...
उन्हें निकालने की कोशिश कर रहा हूँ...

पिताजी- कहां हो बेटे?
टीटू- हॉस्टल में पढ़ रहा हूं, एग्जाम बहुत नजदीक हैं, इसलिये बहुत पढ़ना पड़ता है!!!
आप कहां हो?
पिताजी- ठेके पे..तेरे पीछे लाइन में लास्ट में खड़ा हूं, एक हाफ मेरा भी ले लेना..

वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ

हिंदी कार्यशाला अक्तूबर- दिसंबर, 2022 तिमाही

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2022 की अक्तूबर – दिसंबर तिमाही के लिए 09 दिसंबर, 2022 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के विविध एन्टिटियों के प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आईआईएसयू और सीएमएसई के विभिन्न अनुभागों से नामित किए गए 30 कार्मिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती लक्ष्मी जी सहायक निदेशक (रा.भा) ने संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री सोमदत्तन, भूतपूर्व सहायक निदेशक (रा.भा), आयकर विभाग एवं श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, भूतपूर्व उप निदेशक (रा.भा) तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला एवं कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशालाओं से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें। कार्यशाला के प्रथम सत्र का संचालन करने के लिए आमंत्रित श्री सोमदत्तन, भूतपूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग ने 'टिप्पण व आलेखन ' पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

द्वितीय सत्र के दौरान श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, पूर्व उप निदेशक (रा.भा) वीकेसी, ने 'राजभाषा नीति की मुख्य बातें' विषय पर कार्यशाला का संचालन किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, राजभाषा संकल्प 1968 और समय समय पर राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के संबंध में जारी दिशानिर्देशों से अवगत कराने का प्रयास किया। प्रतिभागियों को दोनों सत्रों से संबंधित अध्ययन सामग्रियाँ भी दी गईं।

सत्रांत के पूर्व सहायक निदेशक (रा.भा) ने सभी प्रतिभागियों से अपनी प्रतिपुष्टि देने का अनुरोध किया। प्रतिभागियों का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री प्रकाश वी पी, वरि. सहायक पीजीए ने कार्यशाला के आयोजन पर अपना संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला उनके लिए काफी उपयोगी रहा।

सहायक निदेशक (रा.भा) ने प्रतिभागियों से हिंदी कार्यान्वयन के लिए वीकेसी में लागू की गई प्रोत्साहन योजनाओं से लाभान्वित होने और हिंदी कार्यान्वयन में सहयोग और समर्थन प्रदान करने का अनुरोध किया। कुमारी कस्तूरी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापने के साथ कार्यशाला समाप्त हुई। •

विश्व हिंदी दिवस समारोह - 2023 अक्ष के 12 वें अंक का विमोचन

हर साल जनवरी 10 को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी को प्रतिष्ठित करने के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। गत वर्षों की तरह इस साल भी वीकेसी (आईआईएसयू तथा सीएमएसई) में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

समारोह के अंतर्गत जनवरी 10, 2023 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए अलग-अलग रूप से हिंदी निबंध लेखन और कहानी लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा, हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए सामान्य रूप से तकनीकी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

विश्व हिंदी दिवस समारोह – 2023 एवं हिंदी पखवाडा समारोह 2022 का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक मार्च 13, 2023 को आयोजित किया गया। समारोह में विश्व हिंदी दिवस के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं और हिंदी पखवाडा समारोह, 2022 के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। श्रीमती अंजना पी एस द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना गीत के साथ कार्यक्रम का श्रीगणेश किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू द्वारा किया गया। श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक, एमआईएसए, ने मंचासीन अधिकारियों तथा सभागार में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में निदेशक महोदय ने विश्व हिंदी दिवस मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला कि विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करने तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करने हेतु विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। उन्होंने इस उपलक्ष्य में वीकेसी में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सराहना की। उन्होंने सभी विजेताओं तथा प्रतिभागियों को बधाई दी। इस अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा वीकेसी की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "अक्ष" के बारह्वें अंक का विमोचन भी किया गया। श्री के एस मणि, सह निदेशक, आईआईएसयू तथा श्री षाजी तोमस, उप निदेशक , सीएमएसई द्वारा आशीर्वाद भाषण दिए गए । तदुपरांत, निदेशक, सह निदेशक एवं उप निदेशक, सीएमएसई द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किया गया। इस अवसर पर हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए सर्वोत्तम अनुभाग को रूप में चयनित पीजीए वीकेसी को निदेशक महोदय द्वारा चल वैजयंती पुरस्कार भी प्रदान किया गया। श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा. निदेशक (रा.भा) ने विश्व हिंदी दिवस समारोह, हिंदी पखवाडा, एवं अक्ष की प्रस्तुतीकरण में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। श्री प्रियदर्शन ने कुशलतापूर्वक मंच संचालन किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

•

गणतंत्र दिवस समारोह 2023

26 जनवरी, 2023 को आईआईएसयू में 74वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। डॉ डी साम दयाल दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सलामी ली। सीआईएसएफ दल द्वारा मार्च पास्ट किया गया। इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए, डॉ. डी साम दयाल देव ने आईआईएसयू समुदाय की कड़ी मेहनत और अद्भुत उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से एलवीएम3 - एम 2/ वनवेब इंडिया मिशन का उल्लेख किया, जो विशिष्ट रूप से एक लंबी अवधि का मिशन था जिसमें नेविगेशन पैकेज आईआईएसयू द्वारा उपलब्ध कराए गए थे। उन्होंने ओसियनसैट-3 मिशन, अर्ध-ह्यूमनॉइड के साकार होने एवं रोबोटिकी क्षेत्र में किए गए अन्य अनुकरणीय कार्यों के बारे में और विस्तार से बताया। इसके साथ-साथ नए क्षेत्रों जैसे मलबा प्रबंधन और कक्षीय ईंधन भरना के विकास के आरंभ करने जैसे आने वाले समय की झलक देते हुए उन्होंने आईआईएसयू सहयोगियों से चुनौतियों का सामना करने की अपेक्षा की ताकि हम नए अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जल्दी से अनुकूल हो सकें और बढ़ते हुए राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करके अपने संगठन को सशक्त बना सकें। उन्होंने आईआईएसयू समुदाय से राष्ट्रीय लक्ष्यों को साकार करने की दिशा में अपने प्रयासों में संगठनात्मक तालमेल बनाए रखने को कहा। समारोह में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए जिसमें कर्मचारी, कार्य पैकेज कार्मिक और उनके परिवार के सदस्य भी शामिल थे। •

स्वच्छता पखवाड़ा 2023

आईआईएसयू में 01-15 फरवरी, 2023 के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।इस दौरान विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं।1 फरवरी, 2023 को सुबह 11.00 बजे डॉ. डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू द्वारा आईआईएसयू मुख्य भवन के फ़ोयर में सामूहिक प्रतिज्ञा के साथ स्वच्छता पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित कर्मचारियों ने स्वच्छता को जीवन के एक तरीके के रूप में गोद लेने की एवं दूसरों को भीऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करने की प्रतिज्ञा ली । आईआईएसयू मुख्य भवन में एक स्वचालित सैनिटाइज़र डिस्पेंसर का भी उदखाटन किया गया।

02 फरवरी, 2023 को आईआईएसयू के परिसर में सामूहिक सफाई अभियान चलाया गया जिसमें आईआईएसयू के निदेशक महोदय एवं, सह निदेशक महोदय ने इस अभियान का नेतृत्व दिया ।सामूहिक सफाई अभियान में कर्मचारी, कार्य पैकेज कार्मिक और सीआईएसएफ दल ने बड़ी संख्या में सक्रिय रूप से भाग लिया। कर्मचारियों और कार्य पैकेज कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएँ और 'दैनिक जीवन में स्वास्थ्य और स्वच्छता के अभ्यास' विषय पर प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई।कर्मचारियों के बच्चों के लिए चित्रकारी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई ।कर्मचारियों के लिए 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' विषय पर हिंदी, अंग्रेजी और मलयालम में एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सरकारी एलपी स्कूल, मन्नारकोणम, वट्टियूरकाव, तिरुवनंतपुरम में छात्रों के लिए 'हमारे दैनिक जीवन में स्वच्छता और साफ-सफाई की प्रथाएँ' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई।आईआईएसयू परिसर में और उसके आसपास फॉगिंग और धूम्रीकरण, जलस्रोत एवं जल निकायों की सफाई, अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण, पुराने रिकॉर्डों को डिजिटाइज़ करना और हटाना, वर्षा जल संचयन का पुनरुद्धार कार्य, इन-हाउस बायोगैस संयंत्र संचालन/रखरखाव,इन-हाउस कम्पोस्ट गड्ढों की रखरखाव गतिविधियाँ, आईआईएसयू मुख्य भवन की ऊर्जा के लिए छत पर सोलर पैनल लगाना, पुस्तकालय एवं संगोष्ठी समिति द्वारा 'अपशिष्ट प्रबंधन के परिप्रेक्ष्य पर स्वच्छता की समझ' व्याख्यान, जैसी अन्य गतिविधियाँ, भी आयोजित की गईं। 15 फरवरी, 2023 को स्वच्छता पखवाड़ा का समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डॉ.डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। •

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी) 2023

वीएसएससी और आईआईएसयू द्वारा 20 फरवरी, 2023 से 8 मार्च, 2023 तक संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

इस वर्ष के समारोह का विषय था 'समानता को गले लगाओ' जिसका उद्देश्य उचित संसाधनों का विस्तार करना और हर किसी के लिए अवसर,चाहे उनकी आवश्यकताएँ एवं परिस्थितियाँ कितनी भी अलग क्यों न हों, प्रदान करना था।

इस अवसर के प्रतीकस्वरूप, 2 मार्च 2023 को वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स के प्रवेश द्वार से सीएमएसई से होते हुए आईआईएसयू तक एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ.डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू द्वारा किया गया। श्री जी कृष्णकुमार, जीडी, एबीएसजी, द्वारा प्रतिभागियों को वॉकथॉन का बैनर सौंपा गया। वॉकथॉन कार्यक्रम में 600 से अधिक कर्मचारियों ने भागीदारी की। सफेद एवं बैंगनी रंग के कपड़े पहने हुए कर्मचारियों ने वॉकथॉन में भाग लिया। 2 मार्च, 2023 की ही वॉकथॉन कार्यक्रम के ठीक बाद आईआईएसयू स्टोर्स बिल्डिंग के सामने आईआईएसयू और सीएमएसई के अगले वर्ष से पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों द्वारा आईडब्ल्यूडी समारोह के दौरान फलदार पौधे लगाए गए। पौधारोपण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ.डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू की उपस्थिति में श्री के एस मणि, सह निदेशक, आईआईएसयू ने किया। इसके अलावा आईआईएसयू और सीएमएसई के कर्मचारियों द्वारा फ्लैश मॉब, गीतों और समूह नृत्य का प्रदर्शन किया। सभी ने फ्यूजन गानों और नृत्य प्रस्तुतियों का आनंद लिया एवं कार्यक्रम की सराहना की। वीएसएससी शोकेसिंग में कर्मचारियों की प्रतिभा और उपलब्धियों का एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। 8 मार्च, 2023 को निदेशक, आईआईएसयू द्वारा वीएसएससी में प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर बहुत सारे कर्मचारियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

महात्मा गांधी

पहले वह आप पर ध्यान नहीं देंगे फिर वह आप पर हसेंगे फिर वह आप से लड़ेंगे और तब आप दिख जाएंगे ।

* * * * * * * * * * * *

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है ।

विश्व हिंदी दिवस-2023 के विजेताओं की सूची

1. आदित्य कुमार
तकनीकी सहायक, सीएमएसई

निबंध लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	द्वितीय
तकनीकी लेखन	तृतीय

2. सर्वेश कुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, बीएसटीजी

तकनीकी लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	द्वितीय

3. गौरव जोशी
वैज्ञा/इंजी-एससी, आरक्यूए

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	सांत्वना

4. कृषन कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एलवीआईएस

कहानी लेखन	तृतीय
तकनीकी लेखन	सांत्वना
निबंध लेखन	सांत्वना

5. प्रेम प्रकाश
वरि.तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी लेखन	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना

6. अभिलाष सकरिया
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, बीएसटीजी/एसआईएस

तकनीकी लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	तृतीय

7. सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसपीई

निबंध लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	सांत्वना

8. अर्चना वासुदेवन
वरि.परियोजना सहायक, आईआईएसयू लेखा

निबंध लेखन	सांत्वना

9. शिखा के आर
वरि.वैयक्तिक सचिव, एसआईएस

कहानी लेखन	द्वितीय

10. कविता एम के
वैयक्तिक सहायक, टीएसटीजी/एमआईएसए

कहानी लेखन	सांत्वना

11. शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी, एलवीआईएस

कहानी लेखन	सांत्वना

12. आशा ए एस
वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	सांत्वना

13. अंजना पी एस
वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

निबंध लेखन	सांत्वना

14. षीजा जोय
वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

कहानी लेखन	प्रथम

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ !

उपलब्धियाँ

उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

वर्ष 2021-22 के दौरान नगर राजभाषा, कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं में से इस कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "अक्ष" को सर्वोत्तम पत्रिका के रूप में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

नगर राजभाषा, कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम द्वारा वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु श्रेणी-1 (50 से अधिक कार्मिकों वाले कार्यालय) में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

'अक्ष' में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

'अक्ष' के पिछले अंक (अक्तूबर 2022 - मार्च 2023) में प्रकाशित निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों को नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए:

हिंदीभाषी रचनाएँ

मेरी अविस्मरणीय यात्रा

श्रीमती कमला जोशी
श्री गौरव जोशी,
वैज्ञा/इंजी-एससी आरक्यूए की माँ

क्या खोया? क्या पाया?

श्री गौरव जोशी
वैज्ञा/इंजी-एससी
आरक्यूए

मानसिक स्वास्थ्य की अवधारण

श्री रोहित गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसडी,
एआईएस

मायापुरी कथा

श्री नरेश कुमार
श्री प्रेम प्रकाश, वरि.तकनीकी
सहायक-ए, आरक्यूए के पिता

हिंदी बचाओ

श्री प्रेम प्रकाश
वरि.तकनीकी सहायक-ए,
आरक्यूए

हिंदीतर भाषी रचनाएँ

मेरे अगत्ती द्वीप के दिन

श्री साजन वी
सहायक इंजीनियर,
आईएसपीई

सूरत यात्रा

श्रीमती लक्ष्मी जी
सहायक निदेशक (रा.भा),
वीकेसी

अंडमान का यात्रा विवरण

श्रीमती लता बी
वरि.परियोजना सहायक,
आईआईएसयू क्रय

चित्रकारी

मास्टर श्रीहरी पी आर
कक्षा-II, श्री रघुनाथ के पी, वैज्ञा/
इंजी-एसएफ, एलवीआईएस का सुपुत्र

अन्य पुरस्कार

हिंदी में सराहनीय कार्य कर रहे कार्मिकों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना 2021-22

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के सदस्य कार्यालयों में हिंदी में सराहनीय कार्य कर रहे कार्मिकों के लिए प्रारंभ की गई विशेष प्रोत्साहन योजना के तहत इस कार्यालय की **श्रीमती आशा ए एस, वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी** को नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ।

राजभाषा पर्व 2023 के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कार्मिक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा पर्व-2023 के दौरान सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी में विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं थीं। प्रतियोगिताओं में वीकेसी के निम्नलिखित प्रतिभागियों ने निम्नानुसार पुरस्कार जीते हैं।

निबंध लेखन - सांत्वना

प्रियदर्शन
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसएफ, पीएसएमडी

टिप्पण एवं आलेखन - सांत्वना

आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए/वीकेसी

हिंदी टंकण गति परीक्षा - सांत्वना

स्मिता नायर एस वी
वैयक्तिक सचिव, एमईएफए, सीएमएसई

वी.के.सी. राजभाषा चल-वैजयंती

वर्ष 2022-2023 के दौरान राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्य निष्पादन के लिए पीजीए, वीकेसी को सह निदेशक महोदय द्वारा चल-वैजयंती प्रदान की गई।

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ

पाठकों की ओर से

दिनांक 28.04.2023 को आपके द्वारा ई-मेल के माध्यम से भेजी गई हिंदी गृह-पत्रिका अक्ष का 12 वाँ संस्करण इस कार्यालय को प्राप्त हुआ है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में दर्शाये गए चित्रों की साज-सज्जा मनमोहक है। अक्ष के संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. टी विजय शेखर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, आईपीआरसी

आपके यूनिट से प्रकाशित 'अक्ष' पत्रिका के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। तकनीकी हिंदी लेखों, कविताओं, यात्रा वृत्तांत, आप बीती तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से युक्त गतिविधियों, प्रशासनिक, तकनीकी एवं टिप्पणियों का समावेश पत्रिका को ज्ञानवर्धक एवं पठनीय बना रहा है। पत्रिका में दी गई प्रत्येक रचना प्रत्येक लेखक की रचना-धर्मिता को काफी अच्छी तरह से प्रस्तुत कर उभार रही है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी काफी आकर्षक है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाइयां। आगे भी ऐसे अंकों की उम्मीद की प्रतीक्षा है।

सी वी विनीता
वरि. अनुवाद अधिकारी, वीएसएससी

रवींद्रनाथ टैगोर

सिर्फ प्यार करने वाला दिमाग एक ऐसा चाकू की तरह है जिसमें सिर्फ ब्लड है, या इसका प्रयोग करने वाले के हाथ से खून निकाल देता है

अब्राहम लिंकन

साधारण लिखने वाले लोग यह दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं

गणतंत्र दिवस समारोह 2023 की झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी) 2023 की झलकियाँ

आभा

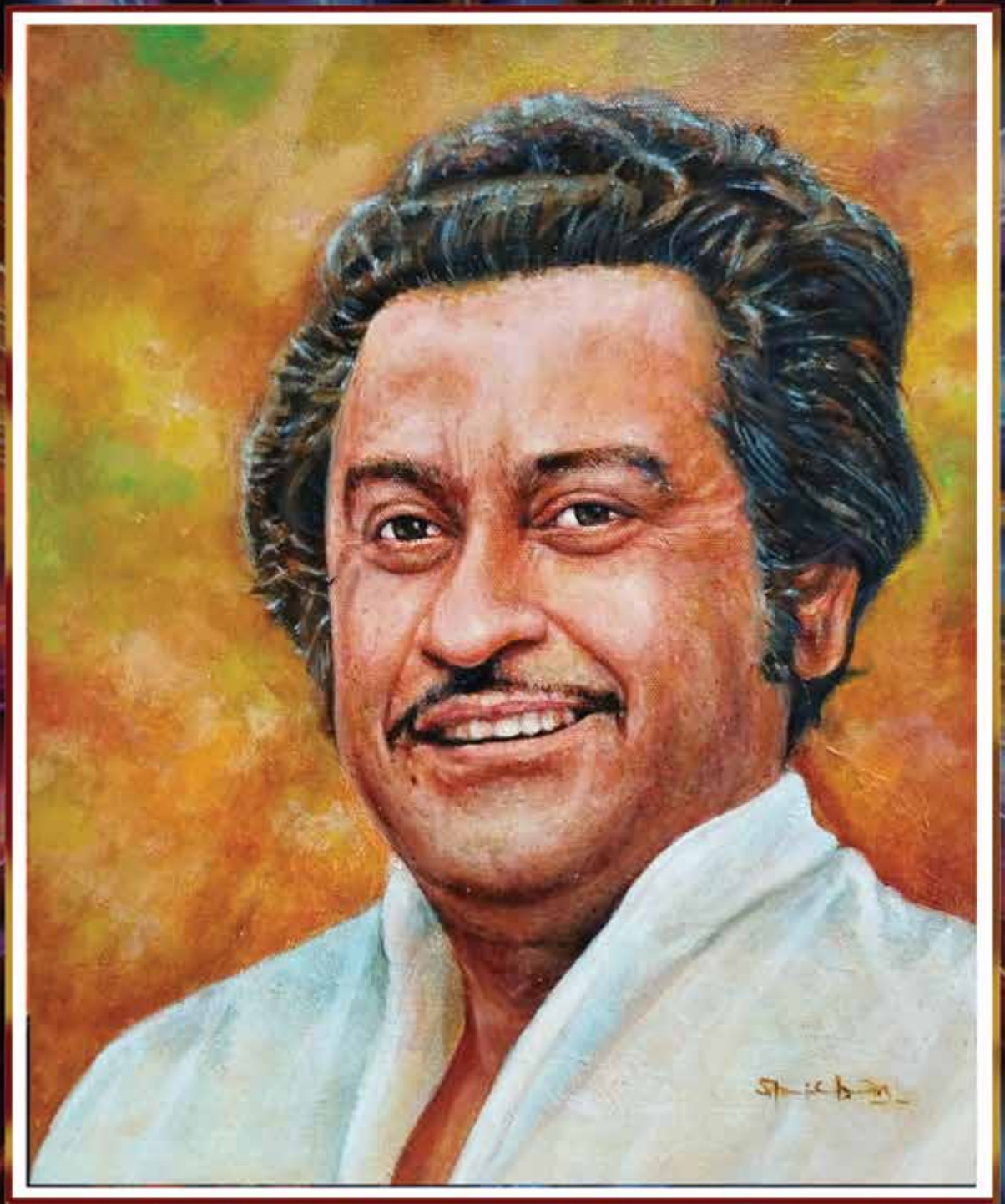

हिंदी अनुभाग, वीकेसी द्वारा प्रकाशित; मेसर्स भानु ऑफसेट, तंपानूर, तिरुवनंतपुरम में मुद्रित